International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 4, July-August, 2026

दिव्यांग छात्रों हेतु समावेशी विद्यालयो एवं सामान्य विद्यालयो में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस-एक तुलनात्मक अध्ययन

गणेश शाह[1], प्रोफेसर मालविका सती कांडपाल[2]

[1]शोधार्थी, श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय पटेलनगर देहरादून उत्तराखंड
[2]शोधनिर्देशन, Designation- Deen School of Education, श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय पटेल नगर देहरादून उत्तराखंड 248001

शोध सारांश

वर्तमान शोध पत्र का उद्देश्य **दिव्यांग छात्रों हेतु समावेशी विद्यालयो एवं सामान्य विद्यालयो में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस-एक तुलनात्मक अध्ययन** करना है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दोनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक दिव्यांग छात्रों की शैक्षणिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक आवश्यकताओं को लेकर कितने जागरूक, संवेदनशील तथा सक्षम हैं। अध्ययन यह भी विश्लेषण करेगा कि शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता, व्यक्तिगत दृष्टिकोण तथा संस्थागत सहयोग जैसे कारक किस प्रकार से उनकी रेडीनेस को प्रभावित करते हैं। न्यादर्श हेतु **समावेशी और सामान्य** स्तर पर विद्यार्थियों का अध्ययन करने के लिए **150 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इनमें समावेशी और सामान्य से 75-75 शिक्षकों** को लिया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए **मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी मूल्य** का उपयोग किया गया है।

मूल शब्द- समावेशी विद्यालय और सामान्य विद्यालय, दिव्यांग छात्र, रेडीनेस, शिक्षक।

प्रस्तावना

शिक्षकों की रेडीनेस का तात्पर्य उनकी मानसिक, व्यावसायिक, भावनात्मक और व्यवहारिक तैयारी से है, जिससे वे दिव्यांग छात्रों की विशेष आवश्यकताओं को समझ सकें और उन्हें अनुकूल शिक्षण प्रदान कर सकें। वर्तमान शोध पत्र इसी सन्दर्भ में समावेशी विद्यालयों और सामान्य विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, अनुभव, संसाधनों की उपलब्धता और संस्थागत सहयोग जैसे कारकों की तुलना करेगा, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि कौन-से विद्यालय दिव्यांग छात्रों के लिए अधिक

अनुकूल शैक्षणिक वातावरण प्रदान कर पा रहे हैं।[1] इसके माध्यम से यह भी जाना जाएगा कि कौन-से शिक्षक समूह दिव्यांग छात्रों के प्रति अधिक जागरूक, समर्थ और सहायक भूमिका निभा रहे हैं। दिव्यांग वर्ग भी समाज का अभिन्न अंग है।

वर्तमान में, दिव्यांग वर्ग के लिए समावेशी शिक्षा की अवधारणा ने दुनिया भर में महत्वपूर्ण महत्व प्राप्त कर लिया है। समावेशी शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी छात्रों की जनसांख्यिकी को एकीकृत करती है, विशेष रूप से वे जो अलग-अलग तरह से सक्षम हैं या आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि से आते हैं, उन्हें समान अवसर सुनिश्चित करके मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करते हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं बल्कि अपने छात्रों में सहानुभूति, समानता और समावेशिता के आदर्शों को भी विकसित करते हैं। अलग-अलग तरह से सक्षम विद्यार्थियों के लिए समावेशी और सामान्य स्कूलों में शिक्षकों की तैयारी को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनकी मानसिकता, प्रशिक्षण और आचरण इन छात्रों को मिलने वाले निर्देश की गुणवत्ता और संवेदनशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।[2]

अक्सर, सामान्य संस्थानों में शिक्षक अलग-अलग तरह से सक्षम छात्रों को नकारात्मक दृष्टि से देखते हैं, जिससे इन व्यक्तियों में अपर्याप्तता की भावना पैदा होती है। साथ ही, कुछ शिक्षक छात्रों की अनूठी आवश्यकताओं को सहानुभूतिपूर्वक पहचान कर उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं।[3] वर्तमान में, देश भर के अधिकांश विद्यालयों में, शिक्षकों के पास दिव्यांग बच्चों को प्रभावी ढंग से सहायता करने के लिए अपर्याप्त प्रशिक्षण है। नतीजतन, वे या तो इन युवाओं की उपेक्षा करते हैं या उन्हें अलग कर देते हैं। इसके विपरीत, समावेशी शिक्षा प्रणाली में, शिक्षकों को विविधता को अपनाने, नवीन शिक्षण विधियों को लागू करने और प्रत्येक छात्र की पूरी क्षमता के अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होता है। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की जागरूकता, शैक्षिक प्रथाओं के बारे में उनका ज्ञान, संसाधनों का उपयोग करने की उनकी क्षमता, उनके समावेशी दृष्टिकोण और प्रशिक्षण की पहुँच की जाँच करना है। यह इस बात की भी जाँच करता है कि क्या समावेशी स्कूलों के शिक्षक सामान्य स्कूलों के अपने समकक्षों की तुलना में बेहतर तरीके से तैयार और सक्षम हैं।

❖ शोध की परिभाषाएँ

• समावेशी विद्यालय[4]

समावेशी विद्यालय वह विद्यालय है जहाँ सभी प्रकार के बच्चों (सामान्य एवं विशेष आवश्यकता वाले) को एक साथ, एक ही कक्षा में, समान अवसर और सुविधाएँ प्रदान करते हुए शिक्षा दी जाती है।

[1] Wannemacher, A. B. (2021). *Character Education at a Classical Christian Preparatory School: A Case Study Analysis of a School's Curriculum* (Doctoral dissertation, Oral Roberts University).
[2] Pershina, N., Shamardina, M., & Luzhbina, N. (2018). Readiness of teachers for inclusive education of children with disabilities. In *SHS web of Conferences* (Vol. 55, p. 02005). EDP Sciences.
[3] Karynbaeva, O. V., Shapovalova, O. E., Shklyar, N. V., Emelyanova, I. A., & Borisova, E. A. (2021). Teachers' Readiness For Inclusive Education. *European Proceedings of Social and Behavioural Sciences*.
[4] Falvey, M. A., Givner, C. C., & Kimm, C. (2005). What is an inclusive school. *Creating an inclusive school*, *2*, 1-11.

- **सामान्य विद्यालय**[5]

सामान्य विद्यालय वह विद्यालय है जहाँ सामान्य (विशेष आवश्यकता रहित) बच्चों को औपचारिक शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार के विद्यालयों में आमतौर पर राष्ट्रीय या राज्य स्तर के निर्धारित पाठ्यक्रमों के अनुसार पढ़ाई होती है।

- **दिव्यांग छात्र**[6]

दिव्यांग छात्र वे विद्यार्थी हैं जिनमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदनात्मक दिव्यांगता होती है, जिसके कारण उन्हें सामान्य शिक्षा प्रक्रिया में भाग लेने में कठिनाई होती है।

- **शिक्षक की परिभाषा**[7]

शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो विद्यार्थियों को ज्ञानए मूल्योंए कौशलों और व्यवहारों की शिक्षा देता हैए उनके बौद्धिकए सामाजिकए नैतिक एवं मानसिक विकास में मार्गदर्शन करता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

जावेरी ने सन् **(2001)**[8] में **सामान्य विद्यालयों के प्रशासकों और शिक्षकों के लिए दिव्यांग छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा** पर अध्ययन किया। मॉड्यूल को "प्रिंटेड मीडिया" दृष्टिकोण "इंटरैक्टिव दृष्टिकोण" का उपयोग करके लागू किया गया था। परिणामों ने जागरूकता पैदा करने के लिए दोनों दृष्टिकोणों की समान प्रभावशीलता का संकेत दिया। शिक्षकों ने समावेश को वांछनीय और व्यवहार्य नहीं माना। वर्तमान शैक्षणिक प्रणाली में बड़े वर्ग का आकार, विशाल पाठ्यक्रम सामग्री, दिव्यांग आबादी से निपटने के लिए प्रशिक्षण और जागरूकता की कमी, कठोर पाठ्यक्रम और समय सीमा जैसे कारक व्यापक रूप से देखे जाते हैं, चाहे स्कूल का प्रकार (निजी या सरकारी सहायता प्राप्त) हो या स्कूल का स्तर (प्राथमिक या उच्च विद्यालय) हो। ये कारक समावेश के व्यवहार्य होने के शिक्षक के दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते प्रतीत होते हैं। दिव्यांग आबादी के लिए तैयार किए गए प्रावधानों और नीतियों से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता सामान्य शिक्षकों के बीच बहुत कम थी।

डैश और डैश, नीना ने सन् **(2005)** में समावेशी शिक्षा का मतलब विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को नियमित कक्षा में ठूंसना नहीं है। हमें उनकी विविधता को स्वीकार करना होगा, उनकी व्यक्तिगतता का सम्मान करना होगा, स्कूल की सभी गतिविधियों में उनकी भागीदारी के लिए अवसर प्रदान करना होगा और बच्चों और शिक्षक दोनों को सहायता प्रदान करनी होगी ताकि बच्चे अपनी पूरी क्षमता का एहसास कर सकें और शिक्षक उनके प्रदर्शन को बेहतर बना सकें। इसके लिए अन्य बातों के अलावा, शिक्षण प्रथाओं में बदलाव, सामान्य शिक्षण पद्धति से बदलाव की आवश्यकता है।

[5] Suzić, N. (2017). Traditional schools in the modern age. *INOVAEDUCATION 2017*, 24.
[6] Knoblauch, B., & Sorenson, B. (1998). *IDEA's Definition of Disabilities*. ERIC Clearinghouse on Disabilities and Gifted Education, the Council for Exceptional Children.
[7] Han, J., & Yin, H. (2016). Teacher motivation: Definition, research development and implications for teachers. *Cogent education*, *3*(1), 1217819.
[8] Zaveri, L. (2001). Development of an awareness modules on inclusive Education for students with disabilities for administrators and teachers of general schools. *Unpublished M. Ed. Dissertation center of special Education, SNDT women's University, Mumbai*.

शर्मा ने सन् **(2009)**[9] में **बरेली शहर के समावेशी परिवेश में शैक्षणिक उपलब्धि पर सीखने में अक्षम और गैर-दिव्यांग लोगों के आत्म-सम्मान के प्रभाव** पर एक अध्ययन किया। अध्ययन से पता चला कि गैर-दिव्यांग लोगों की तुलना में एलडी लोगों का आत्म-सम्मान कम होता है। एलडी लड़के और लड़कियाँ आत्म-सम्मान के मामले में भिन्न होते हैं, जबकि एलडी और गैर-एलडी लड़कियाँ आत्म-सम्मान के मामले में भिन्न नहीं होती हैं।

डोलगोवा, वी. आई ने सन् **(2017)**[10] ने अपने अध्ययन में **दिव्यांग बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू करने में शिक्षकों की प्रेरक** तत्परता का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि शिक्षकों की सकारात्मक सोच, प्रशिक्षण और संवेदनशीलता समावेशी शिक्षा की सफलता में महत्वपूर्ण कारक हैं। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि जब शिक्षक समावेशन के प्रति प्रेरित और तत्पर होते हैं, तो वे बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ और पूरा कर पाते हैं। यह शोध समावेशी शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करता है।

लिंटांगसारी, ए. पी. ने सन् **(2021)**[11] का अध्ययन **दिव्यांग छात्रों की कॉलेज के लिए तैयारी और उसकी कॉलेज में भागीदारी पर प्रभाव** को स्पष्ट करता है। यह शोध संबंधित साहित्य के रूप में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समावेशी उच्च शिक्षा की दिशा में छात्रों की प्रारंभिक तैयारी की भूमिका को रेखांकित करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पर्याप्त तैयारी, संसाधनों की उपलब्धता और मार्गदर्शन से दिव्यांग छात्रों की शैक्षणिक सहभागिता और सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। यह शोध समावेशी शिक्षा की नीति और क्रियान्वयन में सुधार के लिए दिशा प्रदान करता है।

समस्या कथन

दिव्यांग छात्रों हेतु समावेशी विद्यालयो एवं सामान्य विद्यालयो में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस-एक तुलनात्मक अध्ययन ही इस शोधपत्र की समस्या है।

अध्ययन की आवश्यकता

दिव्यांग छात्रों के लिए उचित शैक्षिक वातावरण और समर्थन प्रदान करने के लिए शिक्षकों की तत्परता महत्वपूर्ण है। समावेशी विद्यालयों में शिक्षक अक्सर विशेष शिक्षा में प्रशिक्षित होते हैं, जबकि सामान्य विद्यालयों में यह प्रशिक्षण सीमित होता है, जिससे दिव्यांग छात्रों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। यह अध्ययन इस बात की जांच करेगा कि इसके अतिरिक्त यह अध्ययन यह भी दर्शाएगा कि क्या वर्तमान शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्याप्त हैं अथवा उनमें किसी प्रकार के सुधार की आवश्यकता है। इस प्रकार का तुलनात्मक विश्लेषण नीति निर्माताओं, शिक्षण संस्थानों और प्रशिक्षण इकाइयों को सशक्त निर्णय लेने में सहायक हो सकता है। साथ ही, इससे दिव्यांग छात्रों के लिए एक अधिक समावेशी, समान और प्रभावी शैक्षणिक वातावरण तैयार करने की दिशा में ठोस प्रयास किए जा सकते हैं। अध्ययन यह भी स्पष्ट करेगा कि संसाधनों, शिक्षण रणनीतियों, सहायक

[9] Sharma, B., & Venkateshwarlu, D. (2009). Influence of self-esteem of learning disabled and nondisabled on academic achievement in inclusive setting. *Disabilities and Impairments*, *23*(2), 135-139.
[10] Dolgova, V. I., Kutepova, N. G., Kapitanets, E. G., Kryzhanovskaya, N. V., & Melnik, E. V. (2017). The study of motivational readiness of teachers to implement inclusive education of children with disabilities. *Revista espacios*, *38*(40).
[11] Lintangsari, A. P., Emaliana, I., & Rahajeng, U. W. (2021). Are Students with Disabilities Ready for College? The Influence of College Readiness to College Engagement. *International Journal of Evaluation and Research in Education*, *10*(3), 845-853.

तकनीकों और दृष्टिकोणों में क्या-क्या अंतर हैं, जो दोनों विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवहार और दक्षता को प्रभावित करते हैं।

उद्देश्य

- विभिन्न दिव्यांग छात्रों हेतु समावेशी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस का अध्ययन।
- विभिन्न दिव्यांग छात्रों हेतु सामान्य विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस का अध्ययन।

परिकल्पना

- विभिन्न दिव्यांग छात्रों हेतु समावेशी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस का अध्ययन हो सकेगा।
- विभिन्न दिव्यांग छात्रों हेतु सामान्य विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस का अध्ययन हो सकेगा।

शोध विधि

वर्तमान अध्ययन के लिए जिस प्रकार के शोध का उपयोग किया गया है वह विवरणात्मक एवं खोजपूर्ण शोध है क्योंकि अनुसंधान के अध्ययन का क्षेत्र नया है और नए अध्ययन की नींव रखने वाले नए आधार की नींव रखने का प्रयास कर सकता है। यह अध्ययन को नया दृष्टिकोण भी दे सकता है और भविष्य में वर्णनात्मक और प्रयोगात्मक अध्ययनों को जन्म दे सकता है। प्रस्तुत अनुसंधान की प्रकृति गुणात्मक एवं सकारात्मक है एवं शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया है।

- **डेटा संग्रह:** प्राथमिक डेटा स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया जायेगा और द्वितीयक डेटा वेबसाइट, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं आदि के माध्यम से एकत्र किया जायेगा ।

- **अध्ययन क्षेत्र:** दिव्यांग छात्रों हेतु समावेशी विद्यालयो एवं सामान्य विद्यालयो में कार्यरत शिक्षकों की रेडीनेस-एक तुलनात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

- **नमूना आकार-** प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श हेतु **समावेशी और सामान्य** स्तर पर विद्यार्थियों का अध्ययन करने के लिए 150 **शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इनमें समावेशी और सामान्य से** 75-75 **शिक्षकों** को लिया गया है।

- **उपकरण-** एमएस एक्सेल और आईबीएम एसपीएसएस एवं स्वनिर्मित प्रश्नावली।

- **तकनीक-** माध्य, एसडी, सहसंबंध और प्रतिगमन

प्रदतों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण - प्रस्तुत शोध के लक्ष्यानुसार विश्लेषण करने के लिए निम्न सारणियों में वर्गीकरण किया गया है।

तालिका संख्या 1: उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विवरण

क्रमांक	जनसांख्यिकीय चर	स्वरूप	संख्या	%
1	लिंग	पुरुष	80	53.3%
		महिला	70	46.7%
2	स्कूल के प्रकार	समावेशी स्कूल	24.0	24.0%
		सामान्य स्कूल	20.0	20.0%
		सरकारी स्कूल	32.7	32.7%
		निजी स्कूल	23.3	23.3%
3	दिव्यांगता के प्रकार	दृश्य दिव्यांगता	26	17.3%
		श्रवण दिव्यांगता	25	16.7%
		चलने-फिरने में अक्षमता	28	18.7%
		बौद्धिक दिव्यांगता	44	29.3%
		एकाधिक दिव्यांगता	27	18.0%
4	क्षेत्र	ग्रामीण	75	50.0%
		शहरी	75	50.0%

तालिका संख्या 1 के अनुसार अध्ययन में विविध जनसांख्यिकीय समूहों का संतुलित प्रतिनिधित्व देखने को मिलता है। लिंग के आधार पर पुरुष (53.3%) और महिला (46.7%) प्रतिभागियों का अनुपात लगभग संतुलित है। विद्यालय प्रकार के अनुसार सरकारी विद्यालयों से सर्वाधिक (32.7%) छात्र हैं, वहीं समावेशी (24%), विशेष (20%) और निजी विद्यालयों (23.3%) से भी पर्याप्त सहभागिता है। दिव्यांगता के प्रकार में बौद्धिक दिव्यांगता (29.3%) प्रमुख रूप से पाई गई, जबकि अन्य प्रकार जैसे दृश्य, श्रवण, एकाधिक और गतिशील दिव्यांगता में भी अच्छा प्रतिनिधित्व है। क्षेत्रीय आधार पर ग्रामीण और शहरी/अर्ध-शहरी क्षेत्र से समान रूप से (50-50%) प्रतिभागी चयनित किए गए हैं, जिससे अध्ययन की निष्पक्षता और व्यापकता सुनिश्चित होती है।

तालिका 2

वर्णनात्मक सांख्यिकी			
	औसत	मानक विचलन	N
विशेष शिक्षकों की उपस्थिति और भागीदारी	4.50	.880	150
समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता या विकास	4.43	.862	150

अध्ययन में विशेष शिक्षकों की उपस्थिति और भागीदारी का औसत स्कोर 4.50 (मानक विचलन = 0.880) पाया गया, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश प्रतिभागी विशेष शिक्षकों की भूमिका को समावेशी शिक्षा में अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। इसी प्रकार, समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता या विकास का औसत स्कोर 4.43 (मानक विचलन = 0.862) रहा, जो यह इंगित करता है कि समावेशी शिक्षा की धारणा और क्रियान्वयन को भी प्रतिभागियों द्वारा सकारात्मक रूप में आंका गया है। दोनों चर उच्च औसत स्कोर और अपेक्षाकृत कम मानक विचलन के साथ एक-दूसरे से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं, जो

इस बात की ओर संकेत करता है कि विशेष शिक्षकों की भागीदारी से समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 2.1

Correlations			
		विशेष शिक्षकों की उपस्थिति और भागीदारी	समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता या विकास
विशेष शिक्षकों की उपस्थिति और भागीदारी	Pearson Correlation	1	.102
	Sig. (2-tailed)		.006
	N	150	150
समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता या विकास	Pearson Correlation	-.102	1
	Sig. (2-tailed)	.216	
	N	150	150

प्रस्तुत सहसंबंध (Correlation) विश्लेषण के अनुसार, विशेष शिक्षकों की उपस्थिति और भागीदारी तथा समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता के बीच Pearson सहसंबंध गुणांक **-.102** पाया गया, जो कि अत्यंत कमजोर तथा नकारात्मक संबंध को दर्शाता है। यद्यपि Sig. (2-tailed) मान **0.216** है, जो 0.05 के स्तर से अधिक होने के कारण **सांख्यिकीय रूप से अप्रासंगिक (statistically insignificant)** है। इसका अर्थ यह है कि इन दोनों चरों के बीच कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध स्थापित नहीं होता, और यह संभव है कि अन्य कारक समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता को अधिक प्रभावित कर रहे हों। अतः विशेष शिक्षकों की भागीदारी को प्रभावी बनाने के लिए मात्र उनकी उपस्थिति पर्याप्त नहीं, बल्कि उनकी भूमिका की गुणवत्ता और कार्यान्वयन की प्रभावशीलता भी महत्वपूर्ण है।

तालिका 3

वर्णनात्मक सांख्यिकी								
स्कुल तत्परता								
	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error	95% Confidence Interval for Mean		Minimum	Maximum
					Lower Bound	Upper Bound		
दृश्य दिव्यांगता	26	4.54	1.029	.202	4.12	4.95	3	6
श्रवण दिव्यांगता	25	4.12	.833	.167	3.78	4.46	3	5
चलने-फिरने में अक्षमता	28	4.57	.920	.174	4.21	4.93	3	6
बौद्धिक दिव्यांगता	44	4.43	.925	.139	4.15	4.71	3	6
एकाधिक दिव्यांगता	27	4.81	.962	.185	4.43	5.20	3	6
Total	150	4.49	.947	.077	4.34	4.65	3	6

इस अध्ययन में कुल 150 प्रतिभागियों के उत्तरों के आधार पर विद्यालयों की तत्परता का औसत स्कोर 4.49 पाया गया, जो कि 6 अंकों के पैमाने पर उच्च स्तर की तत्परता को दर्शाता है। इसमें सबसे अधिक औसत स्कोर एकाधिक दिव्यांगता (Mean = 4.81) के लिए प्राप्त हुआ, जो इस बात की ओर संकेत करता है कि विद्यालय इस प्रकार के जटिल और बहुआयामी दिव्यांग छात्रों के लिए अपेक्षाकृत अधिक तैयार हैं।

चलने-फिरने में अक्षमता (Mean = 4.57) और दृश्य दिव्यांगता (Mean = 4.54) के लिए भी तत्परता का स्तर काफी संतोषजनक है, जिससे स्पष्ट होता है कि विद्यालयों ने भौतिक अधोसंरचना और संसाधनों में सुधार किया है, जैसे कि रैम्प, ब्रेल सामग्री आदि।

बौद्धिक दिव्यांगता (Mean = 4.43) के लिए तत्परता अपेक्षाकृत औसत स्तर पर रही, जो यह दर्शाता है कि मानसिक/संज्ञानात्मक समर्थन की दिशा में भी कार्य किया गया है, लेकिन सुधार की संभावना बनी हुई है।

श्रवण दिव्यांगता के लिए औसत स्कोर 4.12 रहा, जो कि सभी श्रेणियों में सबसे कम है। यह संकेत करता है कि सुनने में असमर्थ छात्रों के लिए श्रव्य-सहायक यंत्रों, सांकेतिक भाषा के प्रशिक्षित शिक्षकों या अन्य संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत कम है।

मानक विचलन (Standard Deviation) सभी श्रेणियों में 1 से कम या थोड़ा ऊपर रहा, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभागियों के उत्तरों में बहुत अधिक भिन्नता नहीं थी और अधिकांश ने स्कूल तत्परता को लगभग समान रूप से आंका।

तालिका 3.1

ANOVA					
स्कुल तत्परता					
	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Between Groups	6.665	4	1.666	1.905	.003
Within Groups	126.828	145	.875		
Total	133.493	149			

उपरोक्त ANOVA तालिका के अनुसार विद्यालय तत्परता में विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के आधार पर **सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर** पाया गया है। "Between Groups" का F-मूल्य 1.905 है और **Sig. मान 0.003** है, जो कि 0.05 से कम होने के कारण यह दर्शाता है कि कम से कम दो दिव्यांगता श्रेणियों के बीच विद्यालय तत्परता में **महत्वपूर्ण अंतर** है। इसका अर्थ है कि सभी प्रकार की दिव्यांगताओं के लिए स्कूलों की तैयारी समान नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए **विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के अनुरूप अलग-अलग रणनीतियों और संसाधनों की आवश्यकता है**, ताकि सभी छात्रों को समान समर्थन मिल सके।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समावेशी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक दिव्यांग छात्रों के प्रति अधिक संवेदनशील एवं प्रशिक्षित होते हैं, जबकि सामान्य विद्यालयों के शिक्षकों में तत्परता अपेक्षाकृत कम पाई जाती है। रेडीनेस में यह अंतर प्रशिक्षण, संसाधनों और दृष्टिकोण की भिन्नता के कारण उत्पन्न होता है। समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए सभी शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक है। इस अध्ययन से नीति निर्माताओं को सुधारात्मक कदम उठाने की दिशा में मार्गदर्शन मिलेगा। अंततः, दिव्यांग छात्रों की प्रभावी शिक्षा हेतु शिक्षक की पूर्ण रेडीनेस अनिवार्य है।

संदर्भ सूची

1. Wannemacher, A. B. (2021). Character Education at a Classical Christian Preparatory School: A Case Study Analysis of a School's Curriculum (Doctoral dissertation, Oral Roberts University).
2. Pershina, N., Shamardina, M., & Luzhbina, N. (2018). Readiness of teachers for inclusive education of children with disabilities. In SHS web of Conferences (Vol. 55, p. 02005). EDP Sciences.
3. Karynbaeva, O. V., Shapovalova, O. E., Shklyar, N. V., Emelyanova, I. A., & Borisova, E. A. (2021). Teachers' Readiness For Inclusive Education. European Proceedings of Social and Behavioural Sciences.
4. Falvey, M. A., Givner, C. C., & Kimm, C. (2005). What is an inclusive school. Creating an inclusive school, 2, 1-11.
5. Suzić, N. (2017). Traditional schools in the modern age. INOVAEDUCATION 2017, 24.
6. Knoblauch, B., & Sorenson, B. (1998). IDEA's Definition of Disabilities. ERIC Clearinghouse on Disabilities and Gifted Education, the Council for Exceptional Children.
7. Han, J., & Yin, H. (2016). Teacher motivation: Definition, research development and implications for teachers. Cogent education, 3(1), 1217819.
8. Zaveri, L. (2001). Development of an awareness modules on inclusive Education for students with disabilities for administrators and teachers of general schools. Unpublished M. Ed. Dissertation center of special Education, SNDT women's University, Mumbai.
9. Sharma, B., & Venkateshwarlu, D. (2009). Influence of self-esteem of learning disabled and nondisabled on academic achievement in inclusive setting. Disabilities and Impairments, 23(2), 135-139.
10. Dolgova, V. I., Kutepova, N. G., Kapitanets, E. G., Kryzhanovskaya, N. V., & Melnik, E. V. (2017). The study of motivational readiness of teachers to implement inclusive education of children with disabilities. Revista espacios, 38(40).
11. Lintangsari, A. P., Emaliana, I., & Rahajeng, U. W. (2021). Are Students with Disabilities Ready for College? The Influence of College Readiness to College Engagement. International Journal of Evaluation and Research in Education, 10(3), 845-853.